हरभगवान चावला के काव्य संग्रह 'जहां कोई सरहद न हो' से एक कविता

उतर आओ
मेरे आँगन में
ओ बदहवास चिड़ियो !
यहाँ अभी नफ़रत नहीं है
दहशत नहीं है
सरहद नहीं है –
हिन्दू-मुसलमान की
भारत-पाकिस्तान की
इस आँगन में
रोटी का सनातन मसला है
जिसे तुम बंजारन चिड़ियों से बेहतर
कौन जानता है
और एक माँ है
सदा सबकी ख़ैर मनाती
अभी यहाँ बमों और गोलियों का
कोहराम नहीं है
यहाँ सुकून की साँस ली जा सकती है
अरसे से तुम जिसके लिए
तरस रही हो
रुको मेरी प्यारी चिड़ियो
जब तक मेरे आँगन में
कोई सरहद नहीं खिंच जाती
मुझे पता है
तुम जान जाओगी सरहद का खिंचना
मेरी आँखों के रंग से
मेरी ज़बान की तुर्शी से
मेरे मुँह की झाग से
किसी मासूम चिड़िया के
रक्त की लपलपाती आदिम भूख से
फड़फड़ाते होंगे मेरे हाथ
पर तब भी मैं कैसे पता लगाऊँगा
कौन चिड़िया हिन्दू है, कौन मुसलमान
मैं जब इस असमंजस में होऊँ
तुम उड़ जाना एक साथ
किसी और आँगन की तलाश में
जहाँ कोई सरहद न हो ।

मूर्ति के सामने रो रहा आदमी

कोलंबा कालीधर

तथागत बुद्ध : आप पत्थर से बनी मूर्ति से क्या चाहते हो ?

भक्त : सुख !

बुद्ध : तो दु:ख क्यों नहीं चाहिये ?

भक्त :(गुस्से में) दु:ख है, इसलिये सुख माँग रहा हूँ.

बुद्ध : क्या तुम सवाल पूंछे बगैर जवाब दे सकते हो ?

भक्त : सवाल के बाद जवाब आता है, बिना सवाल जवाब कैसे दें ?

बुद्ध : मेरे प्यारे इंसान, तो फिर दु:ख के बिना सुख की आशा क्यों रखते हो ? सुख तब मिलेगा, जब दु:ख को तुम संघर्ष और मेहनत से दूर करोगे. दु:ख, मूर्ति के सामने बैठकर और रोकर खत्म नहीं होता, बल्कि और बढ़ जाता है, पत्थर की चीजें कभी दु:ख दूर नहीं करती हैं क्योंकि वे निर्जीव है, तुम सजीव हो, इंसान हो, दु:ख दूर करने के कई उपाय हैं, और सुख पाने के भी उपाय हैं. मगर वे उपाय सत्य पर आधारित होने चाहिये. असत्य की राह पर मिलने वाला हर सुख, दु:ख बन जाता है. सत्य की राह पर हासिल किया सुख निरंतर और चिरस्थायी रहता है. जब तक अज्ञान है ,तब तक दु:ख रहेगा, अज्ञान जाने के बाद दु:ख भी नहीं रहता.दु:ख के बिना सुख अधूरा है, मगर जिसे तुम दु:ख समझते हो उसे तुम हरा सकते हो।

भक्त :कैसे ?

बुद्ध : दु:ख एक चीज से पैदा होता है, वह है तृष्णा,

लालच, लगाव,अति प्रेम, अति मोह और उन जैसी चीजों को पाने की आशा. अगर इन तृष्णाओं को आप जीत जाते हैं, तो हर दु:ख, सुख के समान हो जाता है।

जो चीज अपनी नहीं है ये जानते हुये भी, उसे पाने जाते हैं, इसका मतलब, दु:ख आपके पास नहीं आप दु:ख के पास जाते हो. इसलिये असत्य राह, पत्थर के भगवान से दुआ मांगने से दु:ख दूर नहीं होता, बल्कि अमूल्य समय और मन की शांति चली जाती है और इस खूबसूरत दुनिया में तुम उदास बने रहते हो।

भक्त : आप कौन हैं ?

बुद्ध : मैं एक जागृत इंसान हूँ।

भक्त : क्या आपके पास दु:ख नहीं है ?

बुद्ध : दु:ख है, मगर मेरे पास तृष्णा नहीं जिसके पास, तृष्णा है उसके पास दु:ख, चुंबक की तरह चिपका रहता है, और जिसके पास तृष्णा नहीं है, उसके आजू-बाजू दु:ख रहते हैं मगर उसे छू नहीं पाते।

भक्त : तो क्या ये पत्थर की मूर्तियाँ मेरी सुन रही हैं ?

बुद्ध : आप भलीभाँति जानते हो,पत्थर एक निर्जीव है, अगर सच में भगवान कोई होता तो, सामने प्रकट होगा, पत्थर में क्यों जायेगा ?

भक्त : आपका सत्य, वास्तविक सत्य ज्ञान, यह सच है. जो चीज अपनी नहीं है, उसे मेहनत के बगैर पाने की इच्छा रखना यही दु:ख है।

बुद्ध : मगर इस दुनियां से बिछुड़ जानेवाली चीजें मेहनत से नहीं मिलती, उस दु:ख का अंत उस चीज के साथ होता है. दुनिया से बिछुडी चीजें वापस नही आती उसका दु:ख करना मूर्खता के बराबर है।

भक्त- मैं मानसिक रोगी हो गया था, वास्तविक सच देखते हुये भी, काल्पनिक विचारों में व्यस्त रहता था, मुझे आपके जैसा जागृत होना है!

स्विगी अम्मा है और उबर है अप्पा

कोलम्बा कालीधर

बच्चों के दिन के साथ बस चला गया, मैं बस इस बात पर सोच रहा था कि बच्चे आजकल कैसे हैं। ठीक है, मैं स्वीकार करता हूँ कि वे अपने स्मार्टफ़ोन के साथ हमसे अधिक होशियार हैं लेकिन उनके व्यक्तित्व, उनके दृष्टिकोण, हितों और उनकी सामान्य मानसिकता के बारे में क्या है?

मुझे याद है कि साल पहले जब मैं एक बच्चा था, रविवार को "खीर" या "खीर" का एक छोटा सा कप हम सभी के लिए एक स्वर्गीय आनंद होगा। हम उस बड़े अवसर के लिए आगे देखते थे और रसोई से बाहर उस स्वादिष्ट दलिया आने की खुशबू को सूंघने लगते हैं; चेक करने के लिए एक तिरछी नज़र लें, यदि हमारी माताओं ने वास्तव में उन सुनहरे काजू और किशमिश बोब्बिंग को और दूधिया बुलबुले में नीचे और नीचे से जोड़ दिया था । यह देखने के लिए घड़ी में ध्यान से देखो कि सुई वास्तव में चलती है या नहीं, हमारे दोपहर के भोजन की ओर!

आज, माताएं स्विगी के लिए कोई मैच नहीं हैं और रविवार को भी कोई जादू नहीं बचा है ।

चंकी पनीर गेंदों, खस्ता फ्रेंच फ्राइज़, या अंडे जैसे स्वादिष्ट मिठाई बस एक कॉल दूर है । व्यवहार के लिए और अधिक तड़प नहीं है और उन्हें कोई भी कमाई नहीं है- यह सब सिर्फ "आर्डर करने के लिए बनाया गया है" मिनटों के भीतर।

"माँ की कुकिंग" की कोई और बात नहीं लेकिन आजकल "स्विगी बुकिंग" ज्यादा है । पिताओं का कोई अपवाद नहीं है. हमें ट्यूशन, डांस क्लास या दोस्त के स्थान पर छोड़ने के लिए कोई और भीख नहीं है. कोई और पूछने की अनुमति की या माता-पिता को उठाने के लिए प्रतीक्षा कर रहा है. "मैं आज बाहर जा रहा हूँ, मेरी उबर मेरे रास्ते पर है!"

खैर, स्विगी और उबर काम करने के लिए एक वरदान हो सकता है, लेकिन उन्होंने अपने बच्चों में समायोजन, आवास और प्रशंसा के बारीक गुणों को बर्बाद किया है।

बच्चे अपने माता-पिता के प्रयासों या अपने कल्याण के लिए किसी भी विचार से अधिक मांग वाले और स्वार्थी बन रहे हैं. सभी इच्छाएं तुरंत संतुष्ट हैं और धैर्य या दृढ़ता की कोई गुंजाइश नहीं है ।

पिता और माताएं सिर्फ नकदी उतारना और बच्चों की जरूरतों को संतुष्ट करने के लिए एटीएम मशीन बन गए हैं। कोई सवाल नहीं पूछता!

मैं इन उपयोगकर्ता-अनुकूल एप्लिकेशन के खिलाफ नहीं हूँ लेकिन केवल इसलिए चिंतित हूँ कि वे हमारे बच्चों की मान प्रणाली बेकार बना रहे हैं. बच्चे तेजी से चेल्मेश्वर और स्व बन रहे हैं. देखभाल और शेयर करने के मूल्य धीरे-धीरे wane पर होते हैं ।

अगर आपका बच्चा यह महसूस करना शुरू कर देगा कि "स्विगी मेरी अम्मा है और उबर या पेटीएम मेरा अप्पा है".

बच्चों को यह समझ लें कि जीवन कमियों और निराशाओं से भरा हुआ है और यह जीवन की सुंदरता इच्छाओं के तत्काल किया में नहीं है बल्कि उन के रोगी में है।

जीवन सरल सुखों से भरा हो-थोड़ा मणिपुर, थोड़ा अनापशनाप, लेकिन कभी क्यों नहीं!

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य

हम सभी यह जानते हैं कि शिक्षा का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। शिक्षा ही वह सोपान है जिसके द्वारा हम सफलता के उच्च पायदान तक पहुँचते हैं। इस महत्व को जानते हुए सभी अभिभावक अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाने के विषय में चिंतित व प्रयत्नशील रहते हैं।

अभिभावकों का यही प्रयास रहता है कि किसी भी तरह उनका बच्चा अच्छे स्कूल में एडमिशन प्राप्त करें। स्कूली शिक्षा का भी यह लक्ष्य होता है कि बच्चों के अंक अधिकतम रहे। इसके लिए वे महंगे कोचिंग की व्यवस्था करते हैं साथ ही अनेक प्रकार की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराते हैं जिससे कि बच्चों में एक ही भावना उत्पन्न होती है वह यह है कि बच्चा केवल अपने बारे में सोचता है वह उसी सोच में लगा रहता है किसी तरह वह अधिक से अधिक अंक प्राप्त कर किसी अच्छे कॉलेज में दाखिला प्राप्त कर ले। इन सबके बीच में शिक्षा का वास्तविक महत्व कहीं नहीं दिखता क्योंकि यह सारी प्रक्रिया बच्चों को केवल स्वयं के विषय में सोचना सिखाती है। शिक्षा का पहला लक्ष्य है प्रत्येक विषय को गंभीरता पूर्वक सोचना। यदि हम बच्चों को गंभीरता से सोचना सिखाएँ बच्चो जीवन के प्रत्येक पक्ष को गहराई से सोचें तो अवश्य ही वह अच्छाई और बुराई के बीच में फर्क करना सीख जाएंगे और जब बच्चे को अच्छे और बुरे में फर्क करना आ जाएगा तब वह अवश्य ही अपनी उन्नति के विषय में सोचेंगे। शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य है औरों के प्रति सहानुभूति सिखाना। बच्चा केवल अपने लिए ही न सोचे बल्कि वह अपने आस-पास व अपने समाज तथा राष्ट्र के विषय में भी सोचे।

यह बहुत आवश्यक है क्योंकि यदि हम एक बच्चे को केवल अपनी उन्नति के प्रति सजग करते हैं तो वह स्वार्थ होगा लेकिन यदि एक बालक अपने साथ-साथ समाज राष्ट्र और मानवता के लिए भी सोचेगा तभी वह शिक्षा का असली महत्व समझ पायेगा।

नास्तिकों की भावनाएं भी आहत होती हैं

अनिल पटेल

(1) आस्तिक लोग बात बात में कहते रहते हैं कि हमारी भावना आहत हुई। कोई फिल्म बनी तो भावना आहत हुई। किसीने किताब लिखी तो भावना आहत हुई। किसी का नाम पार्वती खान है तो भावना आहत हुई। ऐसी कैसी है आपकी भावना जो बात बात में आहत होती रहती है !!!

(2) भावनाएं तो नास्तिक की भी होती है। हमारी भावनाएं भी आहत होती है। जब किसी मंदिर में किसी नारी को देवदासी बनाकर उसका आजीवन शोषण किया जाता है तब हमारी भावनाएं भी आहत होती है।

(3) आस्था के नाम पर दूध और घी जैसे किमती द्रव्यों का व्यय होता है और मंदिर के बाहर भूखे बच्चें भीख मांग रहे हैं और भगवान को 56 भोग लगाएं जाते हैं तब हमारी भावनाएं भी आहत होती है।

(4) संविधान में बताये गये सिद्धांतों के विरुद्ध आप अंधविश्वास को बढ़ावा देते हो और सांसद की उम्मीदवारी का फॉर्म भरते वक्त घड़ी में 12.39 का समय का मुहूर्त देखते हो तब हमारी भावनाएं आहत होती है।

(5) रथयात्रा हो या ताजिया जुलूस आप रोड पर चक्काजाम कर देते हो तब हमारी भावनाएं भी आहत होती है। माईक पर धार्मिक ध्वनि प्रदूषण से हम परेशान हैं लेकिन आपको किसी की फिक्र नहीं है। भावनाएं हमारी भी है और आहत भी होती है।

(6) जब आप कलेक्टर, डॉक्टर या इन्जीनीयर बनकर अनपढ़ पंडित से पूछते हो कि शादी का सही समय (मुहूर्त) क्या है तब हमारी भावनाएं भी आहत होती है।

(7) शहर में हजारों लोग फुटपाथ पर सोते है और आप नये मंदिर के लिए जमीन का दुरूपयोग करते हैं। स्कूल और अस्पताल बनाने के लिए जमीन और पैसा नहीं है लेकिन मंदिर पर मंदिर आप बनाते जाते हैं तब हमारी भावनाएं आहत होती है।

(8) अच्छी बुक या अच्छे विचार पढने के लिए आपके पास समय नहीं है लेकिन अनपढ़ पंडित की कथा सात सात दिन सुनने के लिए आपके समय ही समय है। माइक, टीवी, मोबाइल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट का इस्तेमाल आप धर्म और अंधविश्वास को बढ़ावा देने के लिए करते हो तब हमारी भावनाएं आहत होती है।

नास्तिकों की भी भावनाएं होती है। आहत भी होती है। नास्तिकों की भावनाओं की कद्र किजिये।